

खानकायाने अद्वा लपादयकमाल ॥ अथ धकिनिदिनया विधान ॥ पञ्चगव्यनहाय ॥ (४५) धन
 नंदहायकज अद्वा लि ४ ॥ वाधानक अद्वा ॥ मनु ॥ नृज निवन लाधिका व सुं यना ये निवस स्वा
 लि १३ ॥ गाथदयके ॥ १३ ॥ धर्गे लददी ॥ ॥ हा ॥ नृज आत्मन लाधिका व नृं दी दूं को हों हट यनाये
 थपपि थुखानका कुरु ॥ यद्वा कुरु ॥ ॥ रुदयाय पादका ॥ नृज अद्वा व दूं पनम धा व दूं धा व
 १ ॥ किनियाने कापा उदयके ॥ कापाल वा नृय रु ४ धा ना मूखी ही मही षटा वम २ पिवर नृनृन
 धनक कुरु अद्वा लि ४ ॥ द्वा व के कुरु ४ ॥ वर रुद्र विद्या न लाधिका व पना पना ये गु द्रु स्थान
 वदने मने व कापा उ हा कुरु द्वा य ॥ पादका ॥ ॥ जाम्ना ययामूल मनुदी आदुनि ॥ पुति
 याय मर्जाने ॥ ॥ धर्गे धकिनिल द
 हा ॥ ॥

किं॥ यथासंख्यसर्वोऽं कर्षासंननुसंख्यं॥ नक कृष्णतथाविर्गु, पुनिलिलामहात्मं॥ (को
 धिनंदवदवयं नकविलसमाहिग॥ गनरुलनउयाहुका, यनयनगनविम॥ गनननुमरु
 साहा, गदुर्लुवमुननुता॥ सर्वपायविनिर्मूकं, सर्वकामसमन्विर्गु। धनधनोऽपूगादि, यो
 तुलसीसुमंजलं॥ गदुर्लुवमुनंननां, यावत्संख्याविधायनं। नावदधसहसादि, वसद्वि
 शिवपूने॥ ॥ जाम्नाय, जनुकमदी, दवनासहनामन, वंदेद्यानपुष्पाय, वमुत्तम
 हयुदद॥ जूननपु, ल्यनयथाऽमस्तु, कुरुलववदायिनारुवकु॥ दवधियकाव, दानस
 न॥ जगुर्गंधादि॥ ॥ ग्राह्यलिङ्गाय॥ स्तुति॥ दक्षिण॥ ॥
 २००॥ हरवधु, कुर्यं वमी, स्वातन्त्र्यावसथ, विधि॥ नय, पागाय, धूनि, वंगल, ऊरुमका, दक्षि
 १ वरु, कर्णयनाका, गव, वरु, जद्वालपाठपाठ, काटलपूजा, वलिलालाहृजा॥

दलि, वायूजा॥	कल, नर्गलाय, माव, कसकन, सिंधुमं॥	मनक३, जायूजा, उंयू, जं४ न
वगवा ५४	सग्वन	धविपात४
वलियाट्ट	अनुमर	ग्वयस एम३०
म्यालनउग	वदुमर	वजिदुगुर्गं२
ग्वजजा, एम५५	दाक	दक्षिणद५
दणवलिकापला॥	जुदग	जव४
वलिकुल, पटजा२५	लदुवामर	धकिनदगसा
खाला, धविजाग्व॥	दाहखान	मं१२गुहाम
वलपणि॥ कृष्णलपूजा	गायपु२	जालनमालकी
		लालासि
		मूर्कसि
		खयवसि
		वनगगसि
		दिवनसि
		निका०
		जालसि
		कृष्ण
		वजंन
		थ(थ
		खाजपा
		नी
		निकद३, निरुला३
		संधू
		लवठ
		सूकम्याल
		लवठ

कील दाल
 नला
 सुक म्याल
 सधु
 सो वाकुल
 (म) उ माहन
 थन सला मूल
 वसधवा सल, न
 वज

पयधन प्रगय
 कमल, नीम
 मयस धूनवा
 टन लि काल
 थन, नवज,
 वजन, थ (थ)
 पयधवाया
 दयके।
 नासा कवि,

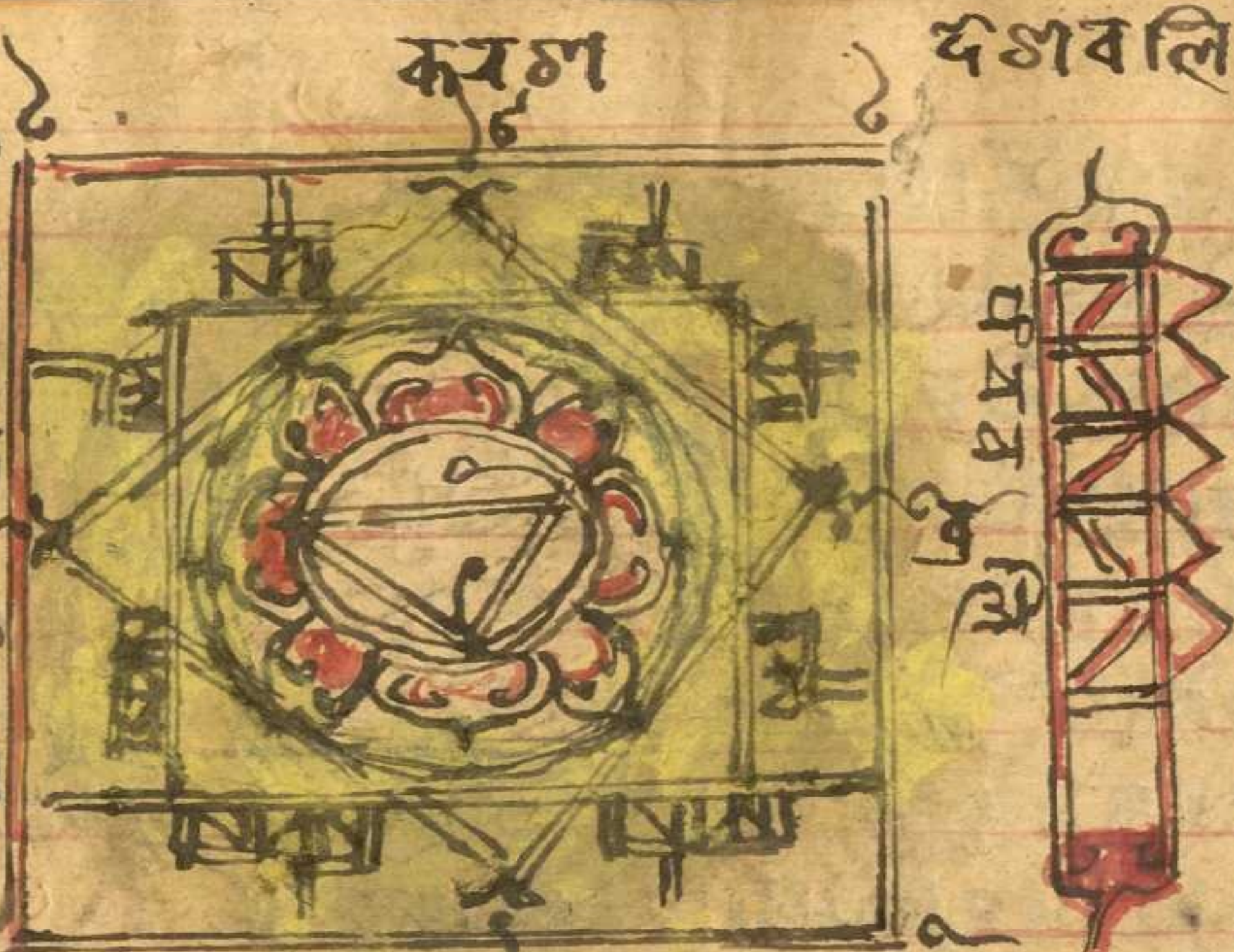
पालु
 मामलस
 खालु
 वाक
 पाथल
 वाग थन
 सटन सया
 सुग न्दयके।

शा खलु
 कलुव
 कुकुम
 अगुव
 णाल
 वाल
 कटाम सी
 थन, सुगम

पयधन, हि.
 धनग १, ५५.
 धनग १, सु
 गमधन १.
 ममन धनग १
 जलि सुदग १
 थन खानका
 यावसध विधि ४॥
 विवून, हउ लिखकन ॥

२

स्वस्ति कुर्यात्सदा विधि स्वस्ति
 मारुतु नवना, यागिनी स्वस्ति
 सदांश्च, स्वस्ति पीन स्वक गका
 पूर्व दक्षिणायश्च व, उलनाड
 इनरुथा, स्वस्ति युकागम
 क्काउ, गुफा प्रकट देवदा ॥
 नवालेन वीष्म जा, स्वस्ति स्वस्व
 ४ स्ववक्रमा स्वमनु ४ स्वमडा
 ४ स्व, स्वायुध पवित्रा नका ॥ १



रुतकृत्रा सिक्का स्वस्ति
 सर्वस्व सफय ॥ स्वस्ति द
 वादिदव णि उवा जानि
 वनन ॥ हव पलानरु
 फा ४ स्वस्ति कुर्या जिद
 वना ॥ स्वस्ति नाजा पुजा
 ना ४ यज्ञमाना स्वस्ति स
 सर्वदा ॥

होम १॥ यज्ञमान २॥

दथुस्तान्नायकं द्रवपिथुस्तान
कृदिनवसपविधि॥
नाय, पाताय, धून, ॐ ल, जजमका
कलालि पूजा रु ३ कल पूजा १ वय
या पूजा रु १ वा कल स, ग २ काल
ग २ मक वा, ग २ धल क सि साख
लधलियत रु ६ छि रु १ कर्तु पागा
का १ य व पागा का रु १ म द वा ल १ व
कनने व द १ १ स लि स न य वा दि च

१ ॐ नमः कृत्तिके नव नवाय ॥ अथ कृत्तिका निवि
र्षिव श्च ॥ विधि (थं व स प ॥ या ना स न वा य ॥ ग ७ १ क
ल ७ ॥ द्रु स क न, सि धु मू ६ ॥ अ द वा न, य ना य ॥ म ना क
मालका ॥ अग्नि कृत्तु, य श्च व लि वा य ॥ ७ ॥ न न ४ क
ल ७ ॥ र्च न ॥ ॐ अ य ॥ य ज मा न य षा रु ज न ॥ अ था
दि ॥ सूर्या र्च ॥ ॐ व द्म त मि त्या दि ॥ ॥ न्या स ॥ ॐ
रुं स ४ अ म्ना य रु द् ॥ ॐ रुं स ४ अं गु षा य न म ४ ॥ ॐ रुं
स ४ न रुं न्या ये स्ता हा ॥ ॐ रुं स ४ म ध्र मा य वी ष द् ॥ ॐ
रुं स ४ अ नां मि का य द् ॥ ॐ रुं स क ति ष का य व ष द् ॥
गु व न म स्ता वा दि ॥ ४

३

ॐ रुं स ४ क व वा य द् ॥ ॐ रुं स ४ न ग ग या य व ष द् ॥ ॐ रुं स ४ अ म्ना य रु द् ॥ ॐ रुं स ४ न्या स ४ ॥
॥ ॥ न न ष र्च (ज न, अ र्च पा ग पू जा ॥ अ वा द्म, ध न मू डा ॥ अ ल म पू जा ॥ कृ ण अं लि न द्वा य
॥ अ स न न ॥ ॐ रुं ॐ रुं स ४ अ ध्र व ण क य र ॥ ॐ रुं स ४ द्वा दा लु वा म्ना य ॥ ॐ रुं स ४ क न्दा स्ता
य र ॥ ॐ रुं स ४ क र्त्तु का ॥ ॐ रुं स ४ ना ला स ना य र ॥ ॐ रुं स ४ प ग स्ता य र ॥ ॐ रुं स ४ क ण वा स्त
ॐ रुं स ४ व षा स्त ॥ ॥ ध्वा न ॥ ॐ रुं स ४ लु द्म टि क र्त्तु का र्त्तु, वि न र्च व न्दु मी लि की व न दा
रु य रु र्त्तु व मू डा माला ध र्त्तु र्त्तु ॥ न र्च ध्वा लो म हा द र्त्तु, ॐ रुं स ४ क मा र्थ सि दि द् ॥ ॐ रुं स ४ न ॥
ॐ रुं स ४ म ल्प ष्च य यो य, अ म्नी ष्च ना य म हा ल क्की ण कि स हि ना य स रुं ॐ पा द् ॥ ॐ रुं स
ग म ये न म ४ य म्ना य र ॥ अ का व म् १ ॥ अ ग लु क् १ ॥ अ न म्मा दा य र ॥ अ अ य म्ना य न म ४ ॥ ॐ
अ म्ना लुं ॐ रुं द्वा य व द्म रु स्ता य म्ना धि प र्त्तु य न म ४ ॥ अ म्ना र्त्तु अ ग न य ण कि रु स्ता य न जा धि

वन ४। धं जहलामरुपागवायदवनमाभुन ॥ पुनिष्ठा ॥ पुनिष्ठितासिधवली, सुपुनिष्ठां तुवन
गयी ॥ सानिष्ठां पुनिष्ठां क्रानि, यजमानादवर्द्धन ॥ सनातु निपददीर्घ, नत्ना नाञ्जल (धेवव ॥ य
जमानसंस्तुगार्थ, सुपुगवसूवाधव ॥ नदलै सर्वकालेषु, दलानरुवननमाभुन ॥ ००० तिकल
संपूजा ॥ ॥

५

नम ४ कलुसमिपंगवृग ॥ सूर्यार्थ ॥ गुननमस्कार ॥ ॥ वकिहि, मूलन, कव, वकुं जंगना ॥ तैहाय
सकलपात्रपूजा ॥ ज्वर्धपात्रपूजा ॥ गुगलुद्रि ॥ जालमयूजा ॥ ज्वधकलुसाधन ॥ ज्वष्टादगपकार
॥ ॥ स्नातदष्टिनानिवीकदी ॥ १ ॥ कि लि २ विश्वका कनायेक ४ जम्नायरुद्र ॥ २ ॥ ज्वर्गु ० ती ॥ धावज्वधा
त्रज्वधानाम्खीवद्वनूपायेक कववायद्व ॥ ३ ॥ गाउनी ॥ कि लि २ विश्वका कनायेक ४ जम्नायरुद्र ॥ ४ ॥ ॥ रुक्तनज्वर्धपात्रादकनष्टला ॥ ५ ॥ कि लि २ विश्वका कनायेक ४ जम्नायरुद्र ॥ ५ ॥ ज्वर्ध
कदी ॥ ६ ॥ धावज्वधानाम्खीवद्वनूपायेक कववायद्व ॥ ७ ॥ खननैकु (गन ॥ ८ ॥ कि लि २
विश्वका कनायेक ४ जम्नायरुद्र ॥ ८ ॥ ॥ उद्धवर्न ॥ ९ ॥ कि लि २ विश्वका कनायेक ४ जम्नायरुद्र ॥ ९ ॥ ॥ पूनदी ॥ १० ॥ तमारुगवनी रुक्तमलायेकां गुं रुदयायनम ॥ ११ ॥ ॥ सिवर्न ॥ १२ ॥ धावज्वधा
त्रज्वधानाम्खीवद्वनूपायेक कववायद्व ॥ १० ॥ कूदन, मानदी ॥ ११ ॥ कि लि २ विश्वका कनायेक ४ ज्व

॥ अहं विन्दवान्यतमः ॥ नमः ॥ अहं रूतिकाग्रयतमः ॥ नमः ॥ अहं वाँ वूँ अग्निशतन्यायतमः ॥ वनी
लिमु लमनुपूजतः ॥ ॥ षड् ॥ अतर्प पूषः ॥ आवाक् ॥ धनमूद्रा ॥ ॥ क्लृप्तपवित्राग्नि
विश्रामयतः ॥ दक्षिणवर्तनः ॥ आनुर्याह मोधत्वा ॥ वाक् ॥ आर्षवर्तः ॥ दक्षवाद्यः ॥ अथाः
दिमासनकृत् ॥ अथ न वनीलि ३२ ॥ स्वस्वदवीमूलमनुनक्षत्र २० ॥ उद्भवमूद्रा ॥ अग्निहो
पतमः ॥ अहं वाक् विंशतन्यायतमः ॥ कृत्ति कश्चनवीरुमिलित्वा कलवालाध्वनीस
गर्हल्लिका क्रिया मासमर्षमूर्ध्वदिप्या ॥ ॥ स्वस्तिवाक् प० ॥ ॐ स्वस्ति कृत्वा सुदावि
प्रीत्यादि ॥ मा ॥ लिनी प० ॥ षड् ॥ अतर्प पूषः ॥ रुदयमनुदी आवाक् काष्ठद्वयेन ॥
अक्रुद्धदयाय २५ ॥ ॥ गत ४ यैव वलिदद्यात् ॥ कलगालाध्वनीस्रवणा ॥ अथ म्या ॥ अग्नि स
लखनहाय ॥ नावायक ॥ अगर्ह गनयतमः ॥ संपूषः ॥ अर्जुन ऊपन ॥ अकिदि २ विश्वका

कनायुक् ४ अक्राय रुद्रध्वनः ॥ वालाध्वनी कलानवकाविथ ॥ ॥ अत्र रुद्रैव वायतमः ॥
अहं वीमरुना विनाये पश्चिमवक्रायतमः ॥ संपूषः ॥ ॥ यवाकृत्य ननु वाल ॥ गता
शनिदक्षक्रिया ॥ ॥ अर्हो धनः ॥ आह निमनु ४ ॥ अनमारुगवति हल्ले मलाये क्रोडा रुद
याय स्वाहा ॥ विधा ॥ क्रोडा र्हाधनाय स्वाहा ॥ अगाह नि ३ ॥ १ ॥ पूषावन ॥ ॐ रुद्रैव वायतमः
मः ॥ अघाव अघाव अघानामूर्ध्वीवद्रुपाये उरुनवक्रायतमः ॥ संपूषः ॥ अहं कृत्ति का
ये कूलदीपाये क्रोडा विनस्र स्वाहा ॥ आह नि ३ ॥ अर्हो पूषावनाय स्वाहा ॥ अ ३ गाह नि ॥
प्रयमासनजीवीरुमर्षवर्त ॥ २ ॥ आमनुनयन ॥ उद्भवमूद्रा ॥ अहं रुद्रैव वायतमः ॥ पूषः ॥ क्रोडा क्रोडा
वर्धन विश्वद्रुं दक्षिणवक्रायतमः ॥ आह नि ॥ क्रोडा क्रोडा वर्धन विश्व विश्वाये वोषट्
स्वाहा ॥ अगाह नि ॥ क्रोडा निर्मानयनाय स्वाहा ॥ आह नि ॥ उद्भवक्रु ॥ नमारुगवति हल्ले

10

ASHA ARCHIVES 3434

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

पीनधिकारकलालिनैष्टुल्लरुंगमहात्मनाधियतय, महारुववायसीगभयसगदष्यविवा
नायश॥ अयंवर्जैर्दुरुवपीनधिकार, नकपादायहोहोहोववममनाधियतयमहारुव
वायसीगभयसगदष्यविवायश॥ अष्टवर्जैर्दुष्टीमनाधियतय, लीमनूपायलिष्टुमात्रम
हाममनाधियतय, महारुववाय, साजायसगदष्यविवानायश॥ ॥ अष्ट॥ नैर्कांजीको
कांकांकांकां॥ अष्टपीनधिकार, तामनूपायलमहात्मनाधियतय, हाटकमहारुव
वायसीगभयसगदष्यविवानायश॥ उष्ट॥ नैर्कांजीको॥ कांकांकांकां॥ उष्टपीनधिकार, कू
र्मयष्टायउष्टममनाधियतय, नैर्बलरुववायसीगभयसगदष्यविवानायश॥ ॥ ॥
रुष्टकादि॥ ॥ कूकावाकू, असिष्टीगांमदि, उष्टकादिपूजनवलिय॥ अष्टां॥ ॥
उष्टमममम, ॥ ॥ नैर्कांजीको॥ अष्ट॥ अष्टां॥ सिनाकरुववाय, उष्टकायदीष्टाकिरुहिनायनम॥

कै खँ गँ घँ ङँ, नू नू नू नू वाय माह ध्वनी ठा कि स हि ता य श ॥ अ वं छं ऊं मं ईं वं लू रे न वा य, को मा नी ठा कि स
हि ता य श ॥ अ टं ०ं उं टं टां का ध रे न वा य, वे षू वी ठा कि स हि ता य श ॥ अ गं थं दं धं नं, उ त्त रू रे न वा य, वा मा हि
ठा कि स हि ता य श ॥ अ पं दं वं रू मं क पा लि स रू न वा य ०० न्द्रा य ती ठा कि स हि ता य श ॥ अ यं नं लं वं शी व ल
रे न वा य, वा मू द्द्रा ठा कि स हि ता य श ॥ अ सै षं णं हं लं दं णा हा न रे न वा य म हा ल द्द्री ठा कि स हि ता य न म ॥
०० ति नू सि ना आ दि ॥ ॥ प्रार्थना ॥ रा रा ठा का दि दि क पा ला ४ व द्ध धं स्वा य धा य ना ४। कु मा न म मि
य त्त न, ठा क्का धि छा न रु न व ॥ ध्व नं प द पा व, नू नि वी ल क, पु ति पा ल या स क ॥ ०० ॥ गंगा
धू के धू वा (०) ध य न् ॥ अ रु द्ध, नू र्ध पा शा द क न, पा द नं ०० द्या दि व द्ध रू स्का व नि वी द्ध द्ध दि
॥ कु ण न पू, वा द व कु द्दि रु क का या व, धू वा धि य ॥ कु ण पा ल न, धू वा पा ल धि य ॥ म न्द्र ॥ अ म्द्राः
नू त्त न्द्रा य न म ॥ कु ण म (०) न धू वा म ध धि य ॥ अ म्द्रा वि द्या न लो य न म ॥ कु ण यो न, धू वा वा

सधिय ॥ मनु ॥ म्रुं शिवगखाय ॥ अरुणधुवासमार्कन ॥ आकाशमदकनपुर्ण ॥ शुवासर्ल
 खर्धुं ठाव, कृष्ण नवाल ॥ अकृष्णिकाये विद्मः ॥ लख शुवासं कायाव शुवासं गय ॥ अकृष्णदी
 पाये धीमह ॥ शुवान अग्निधाय काव, अग्निर्, पुलीनर्, लख गय ॥ अगन्ना कृष्णियुवा दयान्
 ॥ अर्धपात्रादकनपुर्ण ॥ अरुमर्तुदा ॥ शुवा पूजन, यदनादि, अरुपवीत, पृथ्व ॥ अशु
 वाण कयनमः ॥ अशिवाय ॥ शुवा गिष्णु नववर्त ॥ मंत्र ॥ धात्र अद्याव अद्यावामूर्खी १४
 वक्रुपायकं कव वायर्क ॥ संपूज ॥ अशुवास्या नमः ॥ षष्ठ (कन, संपूज ॥ आवाहनादि,
 धनमूजा ॥ साधनपा कृष्ण, अरुनया डाव, अरुलासर्गथव ॥ ७ ॥ नगा विष्टय देव (अधर्न
 ॥ अरुणधुवा कर्ण ॥ अकृष्ण अरुमय रुद्र ॥ मूलन निवी कर्ण ॥ अरुण अरुमय कर्ण ॥ अरुण नाउर्न
 ॥ कवय नाउर्न वे धर्न ॥ धनपात्र धर्न निधाय ॥ मनु ॥ अक्रा ददयायनमः ॥ ॥ धनगुप्ति ॥

१४

पुनः श्वशुरस्कावः ॥ ४ ॥ अग्नि कान्त सधनयुय ॥ वक्रमयी ध्यात्वा ॥ धनविन्दु दानं ॥ कृष्णगुप्ति
 थुं ठाव हाय ॥ मनु ॥ अत्रुद्र (लखाहा ॥ ॥ अग्नि कृष्णया धीमन खसुय ॥ विष्णु मयी ध्याः
 त्वा ॥ विन्दु दानं ॥ मनु ॥ विष्णु वखाहा ॥ कृष्णया मधु सगयाव, वक्रमयी ध्यात्वा ॥ विन्दु दानं ॥ कव
 यमनुन, कृष्णन कृष्ण हायक ॥ अरुम कृष्ण दध वाय ॥ वक्रगुप्ति २ न, धनदक्षिण रागसः
 काय ॥ मनु ॥ अत्रुद्र नय खाहा ॥ दक्षिण नगुं शु कृष्ण ॥ कृष्णगुप्ति धनवाम रागस काय
 मनु ॥ अशामाय खाहा ॥ वामनगुं कृष्ण ॥ कृष्णगुप्ति मधु रागस काय ॥ मनु ॥ अत्रुद्रि
 सामा खाहा ॥ धनरागम (धुस काय ॥ मधु नगुं ॥ अत्रुद्रि धि कृष्णय खाहा ॥ मधु स
 ॥ धनरागगुं कृष्ण ॥ वक्रगुप्ति डा, धनवशुवान उर्ध्व, सामयाय मधु स ॥ मनु ॥ अत्रुद्रि
 यखाहा ॥ अशामाय खाहा ॥ अत्रुद्रि सामा खाहा ॥ अत्रुद्रि नय स धि कृष्ण खाहा ॥ धनर्न

शुभाङ्गि ॥ हृदयादिषु ज्ञानसंपू ॥ कवचनावगुह्यं ॥ कुण्डलिन्याव, नक्षत्रा ॥ ज्ञावाक
 धनम्, डायजमानघनावलोकना ॥ वाक् ॥ लीनयनाङ्गुगर्वनवुयस्माङ्गुगर्गुप्रभूयन्, नमा
 मिनदहर्लिङ्ग, वाकिमय किमागर्ग ॥ ज्ञाञ्जमधुमूर्खदृष्ट्वा, सर्वपातकनाशने ॥ ज्ञाञ्जपापरु
 र्बहृष्टा, ज्ञाञ्जपापरुर्बहृष्टा ॥ ज्ञाञ्जश्चसुननामाञ्ज, सर्वमाञ्जप्रतिष्ठिनी ॥ ॥ गतावकुवि
 धानदी ॥ गृवासज्जलाग ॥ ग्रागा ॥ यूव ॥ ज्ञाञ्ज कृत्ति कायेकुलदीपायेणापूर्ववक्रायस्वा
 हा ॥ दक्षिणा ॥ ज्ञाञ्ज कृत्ति वर्वनशिख, ग्राद ॥ दक्षिणवक्रायस्वाहा ॥ पश्चिम ॥ ज्ञाञ्ज मरुः
 नाविकायेपश्चिमवक्रायस्वाहा ॥ उरुव ॥ ज्ञाञ्ज नञ्जान्नञ्जानामूर्खीवद्वृपायेणा
 उरुवक्रायस्वाहा ॥ मध्य ॥ किलिश्चिक्का कनायेणापवापनवक्रायस्वाहा ॥ ॥ पुनव
 कुश्चिद्यानदी ॥ पूर्व, दक्षिणधनधान ॥ ज्ञाञ्ज कृत्ति कायेकुलदीपायेणापूर्ववक्राय, ज्ञा

15

ज्ञाञ्ज कृत्ति वर्वनशिख, ग्रादक्षिणवक्रायस्वाहा ॥ ॥ दक्षिण, पश्चिमधनधान ॥ ज्ञाञ्ज कृत्ति वर्वनः
 शिख, ग्रादक्षिणवक्राय, ज्ञाञ्ज मरुनाविकायेणापश्चिमवक्रायस्वाहा ॥ पश्चिम, उरुवधनधा
 न ॥ ज्ञाञ्ज मरुनाविकाये, पश्चिमवक्राय, धान्नञ्जान्नञ्जानामूर्खीवद्वृपायेण उरुववक्रा
 यस्वाहा ॥ उरुव, पूर्वयथावमध्यमरुयकधनधान ॥ ज्ञाञ्ज नञ्जान्नञ्जानामूर्खीवद्वृपा
 येण उरुववक्राय, किलिश्चिक्का कनायेणापवापनवक्रायस्वाहा ॥ गृवानधनधानयाय ॥
 ज्ञाञ्ज कनदी ॥ वक्रादिद्यान ॥ ज्ञानमारुगवतिहृत्कमलायेण उरुवक्राय, ज्ञाञ्ज मरुनावि
 कायेणापश्चिमवक्राय, धान्नञ्जान्नञ्जानामूर्खी, वद्वृपायेणा उरुववक्राय, ज्ञा
 ज्ञाञ्ज कृत्ति वर्वनशिख, ग्रादक्षिणवक्राय, ज्ञाञ्ज कृत्ति काये, कुलदीपायेणापूर्ववक्रायस्वाहा ॥
 पूर्व, पश्चिमवर्धवाव, मध्यमरुवा नधनधानहामक ॥ पूर्व, दक्षिण, उरुवपश्चि

म. उर्द्धववायववकुयस्वाहा॥ धनवकु कल्यना॥ ॥ गगनामकर्तुं ॥ अनुकरोववायनमः
किमि२विश्वकाकुलमयेद्रंष्ट्रापनायववकुयनमः॥ आदिति॥ किमि२विश्वकाकुलमयेद्रं
४अमुयस्वाहा॥ अनादिति॥ ५ अनामकवधमयस्वाहा॥ नामयामनु॥ ५ अर्द्धं कुट्टिकाग्नय
स्वाहा॥ ध्यानं॥ ५ नीलवर्णं महानर्द्धं कालामालासमाकुली वलाधुक उदकहस्त
वामं धाकि कमलुर्लु॥ अनाग्नि ध्याय नंदवी, गिनर्द्धं वाव धाहिना॥ नैव जि कामहानर्द्धं
अनाकुरुं नमाम्यहं॥ ७० गिकुजाग्निनामकवर्णं॥ ॥ गग४रुलान्न प्राप्तं॥ संपूज्य
अनाकुरुं ववायश॥ नमो रुगवति हस्तमलायेद्रंष्ट्रा उर्द्धवकुयश॥ आदिति॥ ५ नमो
रुगवति हस्तमलायेद्रंष्ट्रा रुदयाय स्वाहा॥ ५ अर्द्धं रुलान्न प्राप्तं नाय स्वाहा॥ ॥
पूजाकर्तुं॥ पूजा॥ अनाकुरुं ववायनमः॥ अर्द्धं कुट्टिकाय कुलदीपायेष्ट्रा पूर्वव कुय

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

20

वन् गुत्तु प्रसादन सर्वकार्यार्थसिद्धयन् ॥ रुद्रपात्रसमर्पयामि ॥ श्रावय्यो यवाऽशुदनदद्या ॥ ७ ॥
 ज्वाग्निसंश्रुत्तसंकल्प ॥ स्वमग्निमीध्वनं गङ्गापावतं यन्मयतः ॥ तर्पयामि त्वदाऽपि कृत्तिका
 दिपवमं ध्वनं ॥ ॥ गतामिलाद्रुमिदद्याग्निरिवान ॥ ३ ॥ दृग्नाद्रुमि विकृति लाद्रुमि विय ॥ विदवादि
 न, वासुतकात्वाय ॥ कलहाप्रतिष्ठा ॥ ॐ ह्रीं सः स्वाहा ॥ ५४ ॥ स्वाहा ॥ वत्तौ वत्तौ ॥ पुनिष्ठिहि ॥ शुवान
 त्वाय ॥ सखाद्रुमि वियमन्तु ॥ वगिणीन ॥ वान ५४ ॥ मूत्राद्रुमि विय, मन्तु ॥ गहं सः क्रमलवनयू
 आनन्दन किं लेनानन्दवीनाधिफय मूत्राद्रुमि ५४ ॥ नमहा लेनयाय कृत्तिका ध्वनीना किं सहिना
 यस्वाहा ॥ १०७ ॥ गिलाद्रुमि पूर्याया वा ५४ ॥ यन्तदंशुवनगयं विरविर्ग, दिवात्मना साहिः
 हि ४ दिव्य दिव्य कर्लक लावलिकर्त ॥ ३ ॥ नाना रूतं गुरु किं सुविमलं गायग रूताना विर्त, व
 दहं कजनाथवन्दिनगन्त, गिलाद्रुमि लाकाञ्चि ॥ गिलाद्रुमि पूर्याया स मूद्रा कृत्तिका ॥ ५४ ॥ गति

लाङ्गुलि॥ ॥ गतादवाश्चर्न, सां गमपा रु कर्माश्चर्न कुर्यात् ॥ ॥ ऊँ ज्ञादि॥ पृथ्वीराजनं ॥
 धूप, दीप॥ जप, स्तोत्र॥ विधिवत् ॥ धतधूनकं ॥ ॥ गिदेवादिन, ज्ञाङ्गुनिविस्मिन्नुवश्मन्नुन
 दवत्वायत्वं ॥ कण्ठ, वंदनदा ॥ वदूकशासासन ॥ गला ॥ सिंदूरसां ॥ पञ्चवलि ॥ ॥ गोर्योपज्ञं ॥
 कलश ॥ सूत्र ४ गमर्तुस ॥ कूरु ॥ वलुर्नगाय ॥ धत ज्ञादिनदवदका गिपूवत्वं स्तोत्रन, लाय ॥
 ॥ ॥ पुनिष्ठा ॥ ज्ञाङ्गुति ॥ ॐ नमो कृत्तिक कथ्यनमहा रुनवाय स्वाहा ॥ धावज ४ ॥ नैज मूर्ति ॥
 कृत्तिक कथ्यत्रीशकि सहिताय स्वाहा ॥ धावज ४ ॥ वाङ्म ॥ पुनिष्ठितासीत्यादि ॥ ॥
 ॥ ॥ वलिल्लाहापूजाविधि ॥ ॥ ॥ जप स्तोत्र ॥ पासाकमंगल स्वातकोकाय म ॥
 नव ॥ ॥ उल्लेखदगुलियामविधि ॥ ॥ वलिवियजयमा न शुक्लियावर्क ॥ न
 व्यत् ॥ दूधपूजा ॥ पठुनप्यत् ॥ पंथवलिस्मिन्, ज्ञानिकु, दशवलिस्मिन्, हिराण्यकमाल ॥ हि

[illegible]

जन, पवित्रा नालाय ॥ पृथ्वी धारय गुरु ॥ मम रूपा विधायी, विधि नागरु लुपद ॥ ॥
 दक्षिण हि ॥ न के धावा तु याम्यायां । बाधि नागरु लुपद ॥ ॥ पश्चिम दक्ष ॥ क्षीर पान्थि
 मध्यायां । आयु रक्षि हलुपद ॥ ॥ उरु न नागरु ॥ उरु न सु मध्यायां । लक्ष्मी रक्षि हलु
 पुद ॥ मध्यायां ॥ ॥ मध्यायां न नागरु ॥ मध्यायां सध्यायां न नागरु ॥ पश्चिम नागरु पश्चिमाति
 यरु कर्म लि सिद्धाति ॥ ॥ धर्म लि मां सा दृति विर्य ॥ पश्चिम नागरु यरु कर्म योका २२
 नस ॥ मध्यायां मध्यायां ॥ ॥ स्थाय ॥ स्थाय वरु लि सुगु महा माया विपुन ॥ विदवादि ॥
 वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ जगि नागरु ॥ जगि नागरु ॥ जगि नागरु ॥ जगि नागरु ॥
 वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥
 वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥

मूलादव, कुलदवगा ॥ ४१ ॥ लकन मूल मनु न विष ॥ ॥ शुवाह, न्यातन ॥ पूर्य ॥ दिग्वाह
 वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥
 लकन मूल मनु न विष ॥ ॥ शुवाह, न्यातन ॥ पूर्य ॥ दिग्वाह
 वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥
 लकन मूल मनु न विष ॥ ॥ शुवाह, न्यातन ॥ पूर्य ॥ दिग्वाह
 वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥
 लकन मूल मनु न विष ॥ ॥ शुवाह, न्यातन ॥ पूर्य ॥ दिग्वाह
 वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥
 लकन मूल मनु न विष ॥ ॥ शुवाह, न्यातन ॥ पूर्य ॥ दिग्वाह
 वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥ वृत्तादि ॥ १० ॥

[illegible]

मालायुष्यः जदुवालद्यनपू. लून ॥ यजमानं धवक जानक ॥ पू. पूर्ववाद्य ॥ स्वामानक एषादि ॥
वज्रारवर्षांगकोटं, कपिलमन्त्रं, गामलूनं यजमानं, कृत्वा देवा रुमांगं गृह्णन् वसिष्ठिन
४॥ (४) खननात्कपके ॥ पू. पूर्वनकसुवाद्ये र्यममह, षमहागं गमादोय पा. (५) पायाद्वावय
मानं ४ युवलमूदिनयाहेनव ४ काननाला ४ ॥ सर्वं पू. पूर्वसूक्तं सुखाहा ॥ यजमानं शु
वाप्तलय ॥ शुवाज्ज. (६) मूर्खकृत्वा ॥ ॥ मल्लखानकं हावावाय ॥ ॥ गगाज्ज. संपाप ॥
ग ॥ ॐ नमः ४ श्रीकृष्णकृष्णमहाहेनवाय ॥ याहा विष्णुतहताय नयनयना, रुनवसुदि
येका ॥ नादातं मल्लभाद्र, क मयद सुहिता, उहिता हाजिगकं ॥ संपावा, संपवननीपिकुर्वे न
कमले, बद्रक मध्वविषा. (७) नो, ज्ज. धर्म ॐ कानयी ॥ (८) युलमगसुहाहेनव ४ खवना ४ ॥ ४ ॥ स्वा
मानका विनशादुचरुवनमिता, मलमानं गहाला विष्णोष्ठीवाद्यरूपा सुनवनन मिता ॥

खलावई कांवी॥ दिव्योर्नागं गहाये, वरु कृत्स्नमधना, वर्वनाक गहाया, सामग्रा कृत्ति, कांवा
 विद्युदयमु महाज्ञानदिवापमाघ॥ ॥ शुद्ध भक्तसंगुर्तु ह्मि कंमलिमयं यत्सुर्वकुत्रय
 कै, वाईतीर्थपुय् कै सकल गलनिधि, पवन न्रीषधानां। यत्सु यात्सु प्रगर्ह मुनिगल सक
 ल, सविर्ग सर्वसावतादिवी नोमिरुक्ता निवसकलयार्त्त कुरु मूर्तिनमास्तु॥ ॥ शुद्धा
 या॥ शुभमर्दहालिपादिं स्रननमिर्दवदर्वमताई, नागभा (मर्कमर्क) जगति शुद्धकनैस २५
 सत्सुवीजीवहृत्, यद्गानागर्ग गलहिर्मनिगल सकले ४ सिद्ध विद्याधनेष्या वहिदिक्कल
 शर्क दशभाग नयनं तोम्यहं काश्चनारं॥ शुद्धाद्यालाकया लादगदिभाव गिनाहसु मृडा
 लयुक्ता॥ आदित्यादिगहसावसुपुत्रु विसदाज नमदव ४ खनुपाभा मव्यायागम सुतीर्थगलगु
 नवउका ह्मि लुलमाह के वा सिद्धि ४ शुद्धाददाउरुवउवह्म मनीयह्म पुष्पं शुद्धाह्म॥ ॥

उंतभाज्जगय॥ नजारवांका निवि श्वरुवकलूषहर्षपावनं हर्हव ४ ख ४ खर्ही यं विष्य वा कै
 मतिजननमिर्गहा ह्मन गकिहर्ह। अकोश स्रक्तनात्मा कनमयनिकलैस्तु कृत्स्नका नि
 सुर्क, वन्दवर्तु धिक्कुं द्विज निखिल गुर्न साविक गलवर्क॥ ॥ उद्गाद्यैर्वक्रियात्तव
 सयनपदोत्तरमत्त रुवात्त, स्रव्तीर्त्त ह्मन मत्तु मत्तु न स्रनपदं ह्मन्यवद्वि ४ स्रनात्माया
 नस्या धावमत्तु पनमत्तु यहर्न धावया पप्रभुर्ह, सायं शुद्धवदवा ज्जुहिमगरु लदाहुदा
 म्किदाव॥ ॥ उद्गा विदाई खर्तु निवगकि यर्न व ग्गर्त्त रुवात्त, वस्वर्त्तु सवनात्त गि
 रिपनमयूर्गषट्सुवाह्वयात्त। पापध्वंवापमहत्, यत्तु वियुजवर्त्त (शुद्ध) यत्तु वात्त रुदागा,
 सायं सुर्व रुदागा, गुत्तु पनमयूर्ग, दवमत्तौ नवात्मा॥ उद्गा बुद्धात्तु खर्तु सिगनन गगली, हा
 क्कानात्तवीर्त्त, वात्तु आवद्वि वीर्त्त, पवनसहयर्त्त, साद्गम, कानवर्त्तु। सुर्वर्त्त धावधवा

जाग्नयश॥ अधु मा ज्ञयश॥ शिवा ज्ञय स्वाहा॥ जले व वा ज्ञयश॥ अम मा ज्ञयश॥ म ह्म मा ज्ञा
 ज्ञय स्वाहा॥ ॐ ति द षा न्म जि ॥ दि षा षा द व द वी स्व स्वाहा ॥ ब्रह्मा सि द्धय ॥ म लु ४ ॥ ॐ
 ज्ञा स्व कृ न्म ज्ञा कृ न्म स्वाहा ॥ ॐ ज्ञा द ४ कृ न्म ज्ञा कृ न्म स्वाहा ॥ ग म्बु ल द द न् ॥ अग्नि ज्ञा दि वि स र्ज न
 ॥ न्या स लि का य ॥ हृदय म लु न ॥ ज्ञा सा ह ली न या य ॥ हा म पा न्म र्का के प्य ॥ अ य मा ला वा क्ता
 द न् दू य वि द क्ता या व न् ॥ न म स्वा व ॥ यथा वा न पु हा ना ला मि त्या दि ॥ ॥ पू जा क्ता य ॥ व द् २८
 क उ ल क्ता ला ख ॥ या ग्नि र्थ धू ल र्ख ॥ वा म्बु ल द्ध क र्क क म् ॥ ग द्वा क ल ग य ॥ ध र्वा ष्म ना
 य म् ॥ मा ला न व य व क्ता ला द वी सा द र्वा पि र्वा ॥ ध न्म पू जा क्ता य वि धि ॥ ॥ क ल सा हि ष क
 व न्द ना दि ज्ञा षा वा द ॥ सा रि थ य ॥ ॥ को मा वी या ग या य वि धि ॥ ॥ अ द्या दि य्वा
 ला ज न् ॥ हा ग्नु ल्म पू जा धू न क ॥ य ज मा न न्म र्क ना दि ॥ व द ना दि ज्ञा षा वा ल्म ॥ ॐ ति क्ता

क्रि का जि वि धि ४ स मा फ ४ ॥ ॥ ग्रा न्म ॥ सं गि व लि थ्य वि धि ॥ ॥ व लि क्ता य मूल या
 उ चि ल्म र्वा सा के व लि क्ता ० ॥ द र्वा पि र्वा ध व र थ य म् ॥ ॥ ति ल य या द वा र्ज न् ॥ ध र्म
 लि ला क्ता ॥ ॥ सं व न् ६ ६ ३ न्म र्का द्वा षु दि दि ह या क्ता र्म धू ल मि द् ॥ ग्रा षा ह्म द व ना प्री
 ति न्म ॥ द या ना म् क मा वा र्ज न लि खि न मि ति ॥ १ ॥ वि द्या पि थ या ॥
 २ अ थ द व स पा न वि धि ४ ॥ प र व लि ॥ ज्यो यो य्म मि त्या दि ॥ वि द वा दि ॥ ज्ञा क्ता ॥ ॥ ॐ १ प्री
 कृ त्ता ला य ॥ ॥ ॥ व न्द स दा स क ल को लि क्ता व क्ता र्म धू ल मि द् ॥ ग्रा षा ह्म द व ना प्री
 ॥ र्वा षु ग र्वा षु व न् ६ ६ ३ न्म र्का द्वा षु दि दि ह या क्ता र्म धू ल मि द् ॥ ग्रा षा ह्म द व ना प्री
 क ना थ ॥ ॥ ति य सि द्वा क्ता न्म र्का वि ज न्म क ना न न्म म क्ता ४ ॥ ज्यो यो य्म ४ स ग ति न्म क्ता ला न्म
 क ना थ ॥ ॥ ति य सि द्वा क्ता न्म र्का वि ज न्म क ना न न्म म क्ता ४ ॥ २ ॥ ॥ ग्रा षा ह्म द व ना प्री
 ॥ र्वा षु ग र्वा षु व न् ६ ६ ३ न्म र्का द्वा षु दि दि ह या क्ता र्म धू ल मि द् ॥ ग्रा षा ह्म द व ना प्री

चिन्तनक ईशाः निर्विद्यतागद्ययाधनदहलक्ष्मी ४ विहृत्कु ० नवनवमादकसाकसुसंया
 याद्वयंगद्यपति ४ सकलाथदाना ॥ ३ ॥ कलहास्य ॥ वंजहंतेसंते ॥ संपूर्णकलधमयसाहा ॥ ४ ॥
 द्व ४ ॥ नर्मसंशुत्रमित्यादि ॥ ४ ॥ कृष्णस्य ॥ संते ॥ वदुर्मात्रायं ० ० ० ॥ आदिनिदहिकूलनूपिणात्वं
 ॥ अहंतेसंते ॥ आगिष्ठदिरुदाविकाय २ ॥ हृषूनाथ ० ० ० ॥ आदि ॥ ५ ॥ गुनमकुल ॥ हंतेसंते ॥
 नवात्मागुनमकुलाय २ ॥ यस्मैय ४ ॥ निवि ० ० ० ॥ आदि ॥ गुनपंक्ति ४ ॥ अहंते ४ ॥ गुनपंक्तिरु २ ॥
 दविकाय २ ॥ निर्वनमामि ॥ ० ० ० ॥ आदि ॥ ॥ अथवि ४ ॥ हंते ४ ॥ अथधीकर्मरुदावकाय २ ॥
 संप्रानधानविवमा ० ० ० ॥ आदि ॥ ४ ॥ कट ॥ अहंतेसंते ४ ॥ कटनाथखटाकिप्रहिनाय २ ॥
 दीकाविदुर् ० ० ० ॥ आदि ॥ ॥ वक्राट्यादि ॥ अत्रधानत्रमाद्यवनदविमलवक्राटीविश्व
 साहा ॥ ३ ॥ वं ॥ हंसस्तिता ० ० ० ॥ आदि ॥ ॥ ३ ॥ वृत्तस्यजीवरुन ॥ ० ० ० ॥ आदि ॥ ॥ वा ॥ पुनः